

## पाठ ०२ - क्या लिखूँ? (पदुमलाल पुन्नलाल बख्शी)

### रचना से संवाद - मेरे उत्तर मेरे तर्क

1. "हैट टाँगने के लिए कोई भी खूँटी काम दे सकती है... असली वस्तु है हैट, खूँटी नहीं।" निबंध में 'हैट' और 'खूँटी' का उल्लेख किस भाव को सबसे अधिक उजागर करता है?

- सही उत्तर: (क) विषय से अधिक लेखक के भावों की प्रधानता को दर्शाना
- उपयुक्तता का तर्क: लेखक ने ए.जी. गार्डिनर के मत को स्पष्ट करते हुए बताया है कि निबंध लेखन में बाहरी शीर्षक या विषय (खूँटी) महत्वपूर्ण नहीं है, बल्कि लेखक के अंतःकरण से निकलने वाले सच्चे मनोभाव और वैचारिक आवेग (हैट) ही वास्तविक और प्रधान वस्तु हैं।

2. "उनमें लेखक की सच्ची अनुभूति रहती है... उसका उल्लास रहता है।" मानटेन की पद्धति लेखक के लिए किस निर्णय का आधार बनती है?

- सही उत्तर: (घ) अनुभव आधारित स्वच्छंद लेखन को अपनाना
- उपयुक्तता का तर्क: मानटेन को स्वच्छंद निबंध शैली का जन्मदाता माना जाता है। वे आचार्यों के रूढ़ शास्त्रीय नियमों (जैसे अनिवार्य रूपरेखा या क्लिष्ट भाषा) में बंधने के बजाय स्वयं के देखे, सुने और भोगे हुए व्यावहारिक अनुभवों को पूरी ईमानदारी से लिख देते थे। लेखक बख्शी जी ने भी अंततः इसी आत्मीय पद्धति को चुना।

3. "तरुणों के लिए भविष्य उज्ज्वल... वृद्धों के लिए अतीत सुखद..." यह तुलना किस पर आधारित है?

- सही उत्तर: (घ) अभिलाषा और अनुभव
- उपयुक्तता का तर्क: तरुणों (युवाओं) के पास आगे के जीवन की अनगिनत सुंदर आकांक्षाएँ, उम्मीदें और अभिलाषाएँ होती हैं, जबकि वृद्धों के पास जीवन की यात्रा पूर्ण करने के बाद स्मृतियों का एक विस्तृत और सुखद अनुभव होता है।

4. निबंध में अमीर खुसरो की कहानी का उल्लेख किस संदर्भ में किया गया है?

- सही उत्तर: (ख) एक साथ कई विषयों को संबोधित करने की प्रतिभा दिखाने के लिए
- उपयुक्तता का तर्क: अमीर खुसरो ने कुएँ पर बैठी चार औरतों की भिन्न-भिन्न फरमाइशों (खीर, चरखा, कुत्ता, ढोल) को एक ही संक्षिप्त श्लोक या पद्य में बड़ी चतुराई से समाहित कर दिया था। लेखक ने इसी समेकित विधा का सहारा लेकर 'दूर के ढोल' और 'समाज-सुधार' दोनों विषयों को एक ही निबंध में जोड़ने की प्रेरणा पाई।

5. निबंध में समाज-सुधार के संदर्भ में क्या कहा गया है?

- सही उत्तर: (क) सुधारों की आवश्यकता हर युग में बनी रहती है।

- **उपयुक्तता का तर्क:** लेखक का मत है कि मानव इतिहास में समय परिवर्तन के साथ-साथ समाज में निरंतर नए दोष और विकृतियाँ उत्पन्न होती रहती हैं, जिन्हें दूर करने के लिए नव-सुधारों का चक्र भी निरंतर चलता रहता है। अतः सुधारों का कभी अंत नहीं हो सकता।

## मेरी समझ मेरे विचार

प्रश्न 1. निबंध लेखन के विषय में ए.जी. गार्डिनर और लेखक के विचारों में क्या अंतर है?

- **उत्तर:** ए.जी. गार्डिनर के अनुसार निबंध लेखन एक स्वतः स्फूर्त, सहज और भावुक प्रक्रिया है। जब मस्तिष्क में विचारों का आवेग और हृदय में उमंग उठती है, तो निबंध स्वतः ही लिखा जाता है और विषय की कोई चिंता नहीं रहती। इसके विपरीत, लेखक पदुमलाल पुन्नलाल बख्शी का विचार अधिक व्यावहारिक और श्रमसाध्य है। उनका मानना है कि उन्हें कभी ऐसी स्वतः स्फूर्त मानसिक स्थिति का अनुभव नहीं हुआ; उन्हें एक अच्छा निबंध लिखने के लिए गहन चिंतन करना पड़ता है, रूपरेखा पर सोचना पड़ता है और कड़ा बौद्धिक परिश्रम करना पड़ता है।

प्रश्न 2. लेखक के अनुसार वृद्ध और तरुण दोनों ही वर्तमान से असंतुष्ट रहते हैं, पर दोनों की असंतुष्टि के कारण भिन्न हैं। आपके विचार से उनकी असंतुष्टि के क्या-क्या कारण हो सकते हैं?

- **उत्तर:** लेखक के अनुसार दोनों पीढ़ियों की असंतुष्टि के मनोवैज्ञानिक कारण निम्नलिखित हैं:
  1. **तरुणों (युवाओं) की असंतुष्टि का कारण:** युवा पीढ़ी में जोश, गतिशीलता और महत्वाकांक्षा तीव्र होती है। वे वर्तमान व्यवस्था की कमियों, रूढ़ियों और धीमी प्रगति को देखकर बेचैन हो जाते हैं। वे एक आदर्श और उज्ज्वल भविष्य के स्वप्न को वर्तमान में तुरंत धरातल पर उतारने के लिए 'क्रांति' का मार्ग चुनते हैं।
  2. **वृद्धों की असंतुष्टि का कारण:** वृद्ध पीढ़ी अतीत की सुंदर स्मृतियों, स्थापित नैतिक मूल्यों और पुरानी संस्कृति से बंधी होती है। वर्तमान में हो रहे तीव्र सामाजिक-सांस्कृतिक बदलाव और आधुनिक तौर-तरीके उन्हें अपनी संस्कृति पर आघात लगते हैं, इसलिए वे वर्तमान को छोड़कर अपने 'अतीत के गौरव' को वापस पाना चाहते हैं।

प्रश्न 3. नमिता और अमिता किन विषयों पर निबंध लिखवाना चाहती हैं? उनके द्वारा सुझाए गए विषयों पर निबंध लिखने में लेखक को क्या-क्या कठिनाइयाँ आईं?

- **उत्तर:** नमिता 'दूर के ढोल सुहावने होते हैं' विषय पर और अमिता 'समाज-सुधार' विषय पर आदर्श निबंध लिखवाना चाहती हैं। इन विषयों पर लिखने में लेखक को निम्नलिखित व्यावहारिक कठिनाइयाँ आईं:
  - दोनों ही विषय अत्यधिक व्यापक और गंभीर थे, जिन पर परीक्षा के नियमों के अनुसार पाँच-पाँच पृष्ठ लिखना एक बड़ी चुनौती थी।
  - लेखक के पास निबंध की प्रामाणिक सामग्री एकत्र करने के लिए न तो समय था और न ही पुस्तकालय जाकर अनुसंधान करने की सुविधा।

- उनके पास कोई विश्वकोश (इनसाइक्लोपीडिया) या संदर्भ ग्रंथ उपलब्ध नहीं था, जिसके कारण उन्हें केवल अपने संचित व्यक्तिगत ज्ञान के आधार पर ही लिखने की विवशता थी।

प्रश्न 4. निबंधशास्त्र के आचार्यों ने आदर्श निबंध लिखने की कौन-सी युक्तियाँ सुझाई हैं? आप किसी भी विषय पर निबंध लिखने से पहले किस तरह की तैयारी करते हैं?

- **उत्तर:** निबंधशास्त्र के आचार्यों ने आदर्श निबंध के लिए निम्नलिखित युक्तियाँ (नियम) सुझाई हैं:
  - निबंध को छोटा और सुगठित होना चाहिए ताकि उसकी कलात्मक सुंदरता और प्रभावशीलता नष्ट न हो।
  - निबंध के दो मुख्य तत्वों—सामग्री (विचार समूह) और शैली (अभिव्यक्ति का ढंग) पर विशेष ध्यान देना चाहिए।
  - लेखन प्रारंभ करने से पूर्व विषय की एक सुव्यवस्थित रूपरेखा (आउटलाइन) अनिवार्य रूप से बना लेनी चाहिए।
  - भाषा में निरंतर प्रवाह होना चाहिए, जिसके लिए वाक्य छोटे तथा पारस्परिक रूप से संबद्ध होने चाहिए।
  - **मेरी व्यक्तिगत तैयारी:** मैं किसी भी विषय पर लिखने से पहले सबसे पहले उसके मूल वैचारिक भाव को समझता हूँ। इसके बाद प्रप्रस्तावना, मुख्य बिंदु, तार्किक पक्ष-विपक्ष और उपसंहार की एक मानसिक रूपरेखा तैयार करता हूँ और प्रभाव बढ़ाने के लिए प्रासंगिक सूक्तियाँ या कवियों की पंक्तियाँ एकत्र करता हूँ।

प्रश्न 5. मानटेन ने "जो कुछ देखा, सुना और अनुभव किया, उसी को अपने निबंधों में लिपिबद्ध कर दिया।" निबंध लेखन के लिए देखने, सुनने और अनुभव करने की क्या उपयोगिता हो सकती है?

- **उत्तर:** निबंध लेखन में देखने, सुनने और अनुभव करने की उपयोगिता सर्वोपरि है:
  - **प्रामाणिकता और सजीवता:** जब लेखक केवल किताबी ज्ञान या काल्पनिक बातों के बजाय अपने व्यक्तिगत अनुभवों को लिखता है, तो रचना में एक अद्भुत प्रामाणिकता और सजीवता आ जाती है।
  - **सहज और आत्मीय भाषा:** रटे-रटाए शास्त्रीय नियमों के विपरीत, अनुभव-आधारित निबंधों की भाषा अत्यंत सरल, स्वच्छंद और आत्मीय होती है, जिससे सामान्य पाठक स्वयं को सीधे जुड़ा हुआ महसूस करता है।
  - **मौलिकता:** यह लेखक को रूढ़िवादिता और नकल करने की प्रवृत्ति से बचाकर उसके स्वयं के मौलिक विचारों और सच्ची अनुभूतियों को प्रकट करने का पूर्ण अवसर देती है।

### विधा से संवाद: निबंध की कला

प्रश्न - अगर आपको निबंध लेखन का कोई और ढंग बेहतर लगता है तो उसे ऐसे ही आरेख से दर्शाइए और बताइए कि आपको वह ढंग क्यों बेहतर लगता है?

पाठ्यपुस्तक में दिए गए आरेख (Diagram) के आधार पर निबंध लेखन की संपूर्ण व्यवस्थित प्रक्रिया का विवरणात्मक चार्ट निम्नलिखित है:

क्र.सं.	निबंध लेखन का चरण (Sopan)	चरण का अर्थ एवं उपयोगिता (विवरण)
1	प्रेरणा (Prena)	वह आंतरिक मानसिक आवेग, हृदय की उमंग या बाहरी अनुरोध जो लेखक के भीतर लिखने की तीव्र इच्छा जागृत करता है।
2	विषय चयन (Vishay Chayan)	एक विशिष्ट शीर्षक, विचार या समस्या का चुनाव करना जिस पर अपने दृष्टिकोण को केंद्रित करना हो।
3	सामग्री संग्रह (Samagri Sangrah)	चुने गए विषय से संबंधित महत्वपूर्ण तथ्यों, आँकड़ों, ऐतिहासिक संदर्भों और विचारों को एकत्र करना।
4	रूपरेखा निर्माण (Rooprekha Nirman)	विचारों को क्रमबद्धता देने के लिए निबंध को विभिन्न उपशीर्षकों (जैसे- प्रस्तावना, विस्तार, निष्कर्ष) में विभाजित करना।
5	शैली निर्धारण (Shaili Nirdharan)	अभिव्यक्ति के ढंग का चयन करना; भाषा को सरल-प्रवाहपूर्ण रखना है या पांडित्यपूर्ण-गंभीर।
6	लेखन और समापन (Lakhan & Samapan)	अंततः अपनी सच्ची अनुभूतियों को भाषा में पिरोकर एक संतुलित, तार्किक और कलात्मक उपसंहार के साथ रचना पूर्ण करना।

### भाव-विस्तार

**वाक्य 1. "जो तरुण संसार के जीवन-संग्राम से दूर हैं, उन्हें संसार का चित्र बड़ा ही मनमोहक प्रतीत होता है।"**

- **भाव-विस्तार:** इस पंक्ति के माध्यम से लेखक मानवीय मनोविज्ञान के एक बड़े सत्य को उजागर करते हैं। जो युवा अभी विद्यार्थी जीवन में हैं या पारिवारिक संरक्षण में हैं और व्यावहारिक जीवन की कड़वी सच्चाइयों, जैसे—आजीविका कमाना, कड़ा संघर्ष, असफलताएँ और सामाजिक विषमताओं के वास्तविक 'जीवन-संग्राम' से दूर हैं, उन्हें यह दुनिया बेहद हसीन, सरल और सपनों जैसी रंगीन प्रतीत होती है। उन्हें लगता है कि जीवन केवल आनंद और उत्सव का नाम है, परंतु जब वे इस सुखद दूरी को पार कर वास्तविक दुनिया के धरातल पर पैर रखते हैं, तब उन्हें जीवन की यथार्थ कठोरता का सच्चा बोध होता है।

**वाक्य 2. "मनुष्य जाति के इतिहास में कोई ऐसा काल ही नहीं हुआ, जब सुधारों की आवश्यकता न हुई हो।"**

- **भाव-विस्तार:** परिवर्तन इस सृष्टि का शाश्वत और अटल नियम है। मानव समाज जैसे-जैसे आगे बढ़ता है, समय के साथ उसकी पुरानी अच्छी परंपराएँ भी सड़-गलकर रूढ़ियों और कुरीतियों का रूप ले लेती हैं। समाज में नए-नए वैचारिक और सामाजिक दोष स्वतः उत्पन्न होते जाते हैं। इसलिए समाज को पतन के गर्त में गिरने से बचाने, उसे गतिशील, जीवंत और प्रासंगिक बनाए रखने के लिए हर युग में सुधारों की निरंतर आवश्यकता बनी रहती है। इतिहास गवाह है कि बुद्ध से लेकर गांधी तक हर काल में सुधारकों की आवश्यकता इसीलिए पड़ी क्योंकि दोषों का आना कभी बंद नहीं होता।

**वाक्य 3. "आज जो तरुण हैं, वही वृद्ध होकर अतीत के गौरव का स्वप्न देखेंगे।"**

- **भाव-विस्तार:** यह पंक्ति समय चक्र के अपरिहार्य और शाश्वत प्रभाव को दर्शाती है। आज की युवा पीढ़ी जो जोश से भरी है, जो वर्तमान व्यवस्था में तुरंत आमूलचूल परिवर्तन (क्रांति) करना चाहती है और भविष्य के सुनहरे स्वप्न बुन रही है, समय बीतने के साथ अनिवार्य रूप से वृद्ध हो जाएगी। जब उनके स्थान पर एक नई तरुण पीढ़ी आएगी, तब ये आज के युवा भी स्वभाव से रूढ़िवादी या परंपरावादी बन जाएंगे और नई पीढ़ी के विचारों से असंतुष्ट होकर अपने पुराने समय (अतीत) के संस्कारों, आदर्शों और गौरवमयी यादों के स्वप्न देखने लगेंगे।

**वाक्य 4. "निबंध छोटा होना चाहिए। छोटा निबंध बड़े की अपेक्षा अधिक अच्छा होता है।"**

- **भाव-विस्तार:** निबंधशास्त्र के आचार्यों का यह मत निबंध विधा की कलात्मक श्रेष्ठता को सिद्ध करता है। अत्यधिक लंबे और विस्तृत निबंधों में अक्सर विचारों का दोहराव होने लगता है, विषय से भटकाव आ जाता है और भाषा की कसावट तथा रचना की आंतरिक सुंदरता को बनाए रखना लेखक के लिए कठिन हो जाता है। इसके विपरीत, एक छोटा और सुगठित निबंध गागर में सागर भरने जैसा होता है। वह अपनी सघनता, सटीकता, वैचारिक स्पष्टता और तीव्र संप्रेषणीयता के कारण पाठकों के मस्तिष्क पर अधिक स्थायी, गहरा और प्रभावी प्रभाव छोड़ता है।

### मेरा अनुभव

**प्रश्न: आपको किन विषयों पर लिखना सरल या कठिन लगा और क्यों?**

- **उत्तर:** पिछली कक्षाओं में मुझे विज्ञान के चमत्कारों, वृक्षारोपण, या 'मेरा प्रिय त्योहार' जैसे प्रत्यक्ष और व्यावहारिक विषयों पर निबंध या अनुच्छेद लिखना हमेशा **सरल** लगा। इसका कारण यह है कि इन विषयों से जुड़ी सामग्री, उदाहरण और तथ्य हमारे दैनिक जीवन में हमारे सामने बिखरे होते हैं, जिन्हें क्रमबद्ध करना आसान होता है। इसके विपरीत, अमूर्त विचारों, दार्शनिक सूक्तियों या लोकोक्तियों (जैसे—'परहित सरिस धरम नहीं भाई' या 'दूर के ढोल सुहावने') पर लिखना मुझे हमेशा **कठिन** लगा। इसका कारण यह है कि ऐसे विषयों पर लिखने के लिए केवल सतही जानकारी पर्याप्त नहीं होती, बल्कि इसके लिए गहन मौलिक चिंतन, दार्शनिक समझ और अमूर्त भावों को शब्दों में पिरोने के कड़े भाषाई अभ्यास की आवश्यकता होती है।

### विषयों से संवाद

**प्रश्न 1. निबंध में आए महान व्यक्तियों (बुद्धदेव, महावीर स्वामी आदि) के सामाजिक कार्यों का संक्षेप में विवरण दीजिए।**

- **उत्तर:** पाठ में उल्लिखित महान सुधारकों के सामाजिक अवदान का संक्षेप विवरण इस प्रकार है:
  - **बुद्धदेव:** इन्होंने समाज में व्याप्त ऊँच-नीच, जातिगत भेदभाव, कर्मकांडों और पशुबलि का कड़ा विरोध किया तथा करुणा, अहिंसा और अष्टांगिक मार्ग का व्यावहारिक संदेश देकर सामाजिक समता की नींव रखी।

- **महावीर स्वामी:** इन्होंने 'जियो और जीने दो' का अमर सिद्धांत दिया। समाज को सत्य, अहिंसा, अचैर्य और अपरिग्रह के व्रत सिखाए तथा तात्कालिक कुरीतियों को दूर किया।
- **नागार्जुन:** सुप्रसिद्ध बौद्ध दार्शनिक और रसायन विज्ञानी, जिन्होंने 'शून्यवाद' का प्रतिपादन करके भारतीय दर्शन और चिंतन परंपरा को एक अत्यंत तार्किक और नई वैज्ञानिक दिशा प्रदान की।
- **शंकराचार्य:** इन्होंने उपनिषदों के 'अद्वैत वेदांत' का देश-भर में प्रचार किया और भारत के चारों कोनों में चार पूजनीय मठों की स्थापना करके छिन्न-भिन्न हो रहे राष्ट्र को सांस्कृतिक और आध्यात्मिक रूप से एक सूत्र में पिरोया।
- **कबीर:** ये मध्यकाल के सबसे निर्भीक समाज-सुधारक थे। इन्होंने अपने दोहों के माध्यम से हिंदू-मुस्लिम दोनों धर्मों में व्याप्त बाह्याडंबरों, रूढ़ियों, छुआछूत और अंधविश्वासों पर अत्यंत तीखा और सीधा प्रहार किया।
- **नानक देव:** सिख धर्म के संस्थापक, जिन्होंने 'एक ओंकार' (ईश्वर एक है) का उपदेश दिया। उन्होंने समाज में जाति-पाति को मिटाने के लिए 'लंगर' (सामूहिक भोज) और 'संगत' की क्रांतिकारी परंपरा शुरू की।
- **राजा राममोहन राय:** आधुनिक भारत के पुनर्जागरण के अग्रदूत, जिन्होंने सती-प्रथा जैसी अमानवीय कुप्रथा को कानूनी रूप से प्रतिबंधित करवाया, बाल-विवाह का विरोध किया और स्त्री-शिक्षा व प्रेस की स्वतंत्रता की वकालत की।
- **स्वामी दयानंद:** आर्य समाज के संस्थापक, जिन्होंने 'वेदों की ओर लौटो' का नारा देकर समाज में फैले पाखंडों को उखाड़ा, स्त्री-शिक्षा और विधवा-पुनर्विवाह का पुरजोर समर्थन किया।
- **महात्मा गांधी:** इन्होंने सत्य, अहिंसा और सत्याग्रह को अपना हथियार बनाकर न केवल देश को स्वाधीनता दिलाई, बल्कि छुआछूत उन्मूलन (हरिजन उद्धार), खादी, कुटीर उद्योग और स्वावलंबन के माध्यम से ग्रामीण भारत का कायाकल्प किया।

**प्रश्न 2. हमारे आस-पास स्त्री-शिक्षा, पर्यावरण आदि के लिए कार्य करने वाले व्यक्तियों या संस्थाओं के विषय में लिखिए।**

- **उत्तर:** हमारे आधुनिक समाज में सकारात्मक बदलाव लाने वाली कुछ प्रमुख संस्थाएँ और व्यक्ति निम्नलिखित हैं:
  - **संस्थाएँ:** \* 'गूँज' (NGO): यह संस्था ग्रामीण विकास, स्वच्छता और आपदा प्रबंधन के क्षेत्र में शहरी अधिशेष (कचरे/कपड़ों) को संसाधन बनाकर अद्भुत कार्य कर रही है।
    - 'हेल्पएज इंडिया': यह संस्था समाज के उपेक्षित, बेसहारा और बीमार वृद्धों को चिकित्सा, आश्रय और कानूनी अधिकार दिलाने हेतु समर्पित है।
  - **व्यक्तिगत प्रयास:** हमारे स्थानीय क्षेत्र में 'ग्रीन वॉरियर्स' नामक एक समूह है, जिसके नेतृत्व में स्थानीय युवा प्रत्येक रविवार को बंजर भूमियों और सड़कों के किनारे सघन वृक्षारोपण करते हैं और उनकी देखभाल करते हैं। इसी प्रकार, कुछ सेवानिवृत्त शिक्षक निर्धन बस्तियों के बच्चों को निःशुल्क शिक्षा और पाठ्य सामग्री प्रदान कर रहे हैं।

### प्रश्न 3. आपको 'समाज-सुधार' करने का अवसर मिले तो आप क्या-क्या सुधार करना चाहेंगे और कैसे?

- **उत्तर:** यदि मुझे समाज-सुधार करने का वास्तविक अवसर प्राप्त हो, तो मैं मुख्य रूप से दो प्राथमिकताओं पर कार्य करना चाहूँगा:
  1. **व्यावहारिक और मूल्य-आधारित शिक्षा:** मैं शिक्षा व्यवस्था में ऐसा सुधार करूँगा जहाँ किताबी ज्ञान के साथ-साथ प्रत्येक बच्चे को नैतिक मूल्य, पर्यावरण चेतना और कम से कम एक रोजगारपरक तकनीकी कौशल (जैसे- कोडिंग, जैविक कृषि या हस्तशिल्प) अनिवार्य रूप से सिखाया जाए ताकि कोई युवा बेरोजगार न रहे।
  2. **कचरा प्रबंधन और पर्यावरण संरक्षण:** मैं एकल-उपयोग प्लास्टिक (Single-use Plastic) पर पूरी तरह प्रतिबंध लगाने हेतु जन-भागीदारी मॉडल तैयार करूँगा। प्रत्येक कॉलोनी में गीले और सूखे कचरे से विकेंद्रीकृत जैविक खाद बनाने की प्रणाली लागू करूँगा, जिससे हमारे शहर स्वच्छ और आत्मनिर्भर बन सकें।

### प्रश्न 4. भारतीय ज्ञान साहित्य में नैतिक, आध्यात्मिक और व्यावहारिक जीवन में संतुलन की जो बात की गई है, उस पर अपने विचार लिखिए।

- **उत्तर:** भारतीय ज्ञान परंपरा का मूल आधार ही 'संतुलन' (समत्व) है। हमारे शास्त्रों में जीवन को पूर्णता देने के लिए 'पुरुषार्थ चतुष्टय'—धर्म (नैतिकता), अर्थ (व्यावहारिक भौतिक साधन), काम (मानसिक व शारीरिक सुख) और मोक्ष (आध्यात्मिक मुक्ति) का अनुपम सिद्धांत दिया गया है।
  - **नैतिक जीवन (धर्म)** हमें समाज में आचरण की मर्यादा सिखाता है ताकि हम किसी का अहित न करें।
  - **व्यावहारिक जीवन (अर्थ और काम)** संसार में उत्तरदायित्वों को निभाने, परिवार पालने और समाज की प्रगति के लिए आवश्यक है।
  - **आध्यात्मिक जीवन (मोक्ष)** हमारे मन को विकारों से मुक्त कर आंतरिक शांति और मानसिक दृढ़ता प्रदान करता है। यदि मनुष्य केवल भौतिकता (अर्थ) के पीछे भागेगा, तो वह तनावग्रस्त और अनैतिक हो जाएगा। यदि वह केवल वैराग्य (आध्यात्मिकता) चुनेगा, तो सामाजिक प्रगति रुक जाएगी। अतः इन तीनों का सुंदर संतुलन ही एक सुखी, समृद्ध और आदर्श मानवीय समाज का निर्माण कर सकता है।

### सृजन (Creative Writing)

1. 'आम के आम गुठलियों के दाम' लोकोक्ति और 'जैविक खाद निर्माण' पर लेख

#### **आम के आम गुठलियों के दाम: जैविक खाद निर्माण में हमारा प्रयास**

'आम के आम गुठलियों के दाम' हमारी लोक-संस्कृति की एक अत्यंत लोकप्रिय लोकोक्ति है, जिसका सीधा और व्यावहारिक अर्थ होता है—किसी कार्य या वस्तु से दोहरा (अतिरिक्त) लाभ प्राप्त करना। आज के इस आधुनिक पर्यावरण संकट के दौर में यह लोकोक्ति हमारे घरेलू कचरा प्रबंधन और कृषि के क्षेत्र पर शत-प्रतिशत सटीक बैठती है। हमारे घरों, रसोईघरों और सोसायटियों से प्रतिदिन भारी मात्रा में 'गीला कचरा' निकलता है, जैसे—सब्जियों और फलों के छिलके, बची हुई चायपत्ती, बासी भोजन और सूखी पत्तियाँ। सामान्यतः लोग इसे व्यर्थ और बदबूदार गंदगी

समझकर कूड़ेदान में फेंक देते हैं, जो पर्यावरण को प्रदूषित करता है। परंतु, यदि हम थोड़े से सजग प्रयास से इस गीले कचरे को फेंकने के बजाय एक छोटे कंपोस्ट बिन या ज़मीन के गड्ढे में एकत्रित करना शुरू कर दें, तो प्रकृति के सूक्ष्म जीव कुछ ही सप्ताह में इसे एक अद्भुत काले सोने यानी उच्च गुणवत्ता वाली 'जैविक खाद' (Organic Compost) में परिवर्तित कर देते हैं।

इस प्रक्रिया से हमें दो बेहतरीन लाभ (दोहरा मुनाफा) मिलते हैं: पहला, हमारे घर और आसपास से गंदगी और कचरे का पूरी तरह सफ़ाया हो जाता है, जिससे पर्यावरण स्वच्छ रहता है। दूसरा, हमें अपने बगीचे, गमलों या खेतों के लिए बाज़ार से महंगे और ज़हरीले रासायनिक उर्वरक खरीदने की ज़रूरत नहीं पड़ती; हमें घर पर ही मुफ़्त में सर्वोत्तम प्राकृतिक खाद मिल जाती है जो पौधों को प्रचुर पोषण देती है। इस प्रकार, व्यर्थ कचरे से अमूल्य खाद बनाना ही वास्तविक रूप में 'आम के आम और गुठलियों के दाम' पाना है।

## 2. डायरी प्रविष्टि: दूर का अनुमान बनाम (vs) निकट का वास्तविक अनुभव

दिनांक: 24 मई 2026

स्थान: दिल्ली

समय: रात्रि 9:30 बजे

आज का दिन मेरे वैचारिक दृष्टिकोण को पूरी तरह बदलने वाला रहा। पिछले कई महीनों से मैं सोशल मीडिया और समाचारों में अपने शहर की एक बेहद नामी और चकाचौंध से भरी 'वृद्धाश्रम सेवा संस्था' के बड़े-बड़े विज्ञापनों और सुंदर चित्रों को देखता आ रहा था। दूर से उन वातानुकूलित कमरों, मुस्कराते हुए बुजुर्गों के पोस्टरों और संस्था के आलीशान कार्यालय को देखकर मेरा यह पक्का अनुमान था कि वहाँ काम करना कितना आसान, सुखद, ग्लैमरस और आत्मसंतुष्टि से भरा होता होगा। मुझे लगता था कि वहाँ केवल उत्सव मनाए जाते हैं।

परंतु, आज जब मुझे अपनी सामाजिक परियोजना (Project) के अंतर्गत उस संस्था के भीतर जाकर स्वयंसेवकों के साथ पूरे दिन ज़मीनी स्तर पर काम करने का अवसर मिला, तो मेरा निकट का अनुभव उस दूर के अनुमान से बिल्कुल विपरीत और कड़वा रहा। मैंने देखा कि उन चमकते पोस्टरों के पीछे कितनी गहरी उदासी, अकेलापन और कड़वी यथार्थता छिपी है। लकवाग्रस्त और मानसिक रूप से अस्वस्थ बुजुर्गों की दिन-भर सेवा करना, उनके मल-मूत्र को साफ़ करना, उनके गुस्से और चिड़चिड़ेपन को अपार धैर्य के साथ सहना और उनकी आँखों के अवसाद को महसूस करना कितना कठिन और कड़ा मानसिक संघर्ष है। दूर से जो कार्य केवल एक सुहावना और सरल समाज-सेवा का ढोंग लग रहा था, निकट जाने पर उसकी वास्तविक कठोरता और उसमें छिपे कड़े परिश्रम का अहसास हुआ। सच ही कहा गया है कि 'दूर के ढोल सुहावने होते हैं', क्योंकि उनकी यथार्थता की कठोरता पास जाने पर ही महसूस होती है।

### भाषा से संवाद: व्याकरण की बात

(क) समास विग्रह और समास के भेद (पाठ से खोजे गए अन्य उदाहरण)

निबंध में आए प्रमुख सामासिक शब्दों (समस्त पदों) का प्रामाणिक विग्रह और उनके भेदों की सूची नीचे दी गई है:

क्र.सं.	समस्त पद (सामासिक शब्द)	पूर्वपद + उत्तरपद	समास विग्रह (अंग अलग करना)	समास का सही नाम
उदा.	निबंधशास्त्र	निबंध + शास्त्र	निबंध का शास्त्र	तत्पुरुष समास

1	समाज-सुधार	समाज + सुधार	समाज का सुधार	तत्पुरुष समास (संबंध)
2	विचार-समूह	विचार + समूह	विचारों का समूह	तत्पुरुष समास (संबंध)
3	जीवन-संग्राम	जीवन + संग्राम	जीवन का संग्राम	तत्पुरुष समास (संबंध)
4	नदी-तट	नदी + तट	नदी का तट	तत्पुरुष समास (संबंध)
5	विवाहोत्सव	विवाह + उत्सव	विवाह का उत्सव	तत्पुरुष समास (संबंध)
6	नव-वधू	नव + वधू	नई है जो वधू (विशेषण-विशेष्य)	कर्मधारय समास
7	अतीत-गौरव	अतीत + गौरव	अतीत का गौरव	तत्पुरुष समास (संबंध)
8	भविष्य-स्वप्न	भविष्य + स्वप्न	भविष्य का स्वप्न	तत्पुरुष समास (संबंध)
9	सुधारक-दल	सुधारक + दल	सुधारकों का दल	तत्पुरुष समास (संबंध)
10	पंच-पात्र	पंच + पात्र	पांच पात्रों का समाहार (संख्यावाची)	द्विगु समास
11	दिन-रात	दिन + रात	दिन और रात (दोनों पद प्रधान)	द्वंद्व समास
12	धीरे-धीरे	धीरे + धीरे	धीरे के बाद धीरे (पुनरुक्त शब्द)	अव्ययीभाव समास

### (ख) उपसर्ग एवं प्रत्यय का भाषा-बोध

1. निबंध से खोजे गए उपसर्ग और प्रत्यय वाले शब्दों की सूची:

- उपसर्ग वाले शब्द (मूल शब्द के पूर्व जुड़ने वाले खंड):
  - दुर्बोध : दुर् (उपसर्ग) + बोध (मूल शब्द)
  - अनादि : अन् (उपसर्ग) + आदि (मूल शब्द)
  - अस्पष्टता : अ (उपसर्ग) + स्पष्ट + ता (प्रत्यय)
  - असंतोष : अ (उपसर्ग) + संतोष (मूल शब्द)
  - अभिव्यक्ति : अभि (उपसर्ग) + व्यक्ति (मूल शब्द)
  - अनुसंधान : अनु (उपसर्ग) + संधान (मूल शब्द)
- प्रत्यय वाले शब्द (मूल शब्द के अंत में जुड़ने वाले खंड) :
  - सुधारक : सुधार (मूल शब्द) + क (प्रत्यय)

- कठिनाई : कठिन (मूल शब्द) + आई (प्रत्यय)
- साहित्यिक : साहित्य (मूल शब्द) + इक (प्रत्यय)
- प्रगतिशील : प्रगति (मूल शब्द) + शील (प्रत्यय)
- गांभीर्य : गंभीर (मूल शब्द) + य (प्रत्यय)
- आत्मीयता : आत्मीय (मूल शब्द) + ता (प्रत्यय)

2. वाक्यों को उचित उपसर्ग या प्रत्यय लगाकर पूरा करना:

(क) निबंध लिखना बड़ी कठिनाई (कठिन + आई) की बात है।

(ख) वर्तमान से दोनों को असंतोष (अ + संतोष) होता है।

(ग) वाक्यों में कुछ अस्पष्टता (अ + स्पष्ट + ता) भी चाहिए, क्योंकि यह अस्पष्टता या दुर्बोधता (दुर् + बोध + ता) गांभीर्य ला देती है।

3. दिए गए शब्दों में उपसर्ग/प्रत्यय लगाकर नए शब्द बनाना:

- सुधार: सुधारक, सुधारात्मक, नव-सुधार
- सुंदर: सुंदरता, सौंदर्य, सुंदरी
- गति: प्रगति, गतिशील, सद्गति, वेगवान
- समाज: सामाजिक, समाजवाद, समाजीकरण

(ग) भाव एक शब्द अनेक (पर्यायवाची शब्दों का वाक्य प्रयोग)

1: विचार — मनन — चिंतन

- विचार (सामान्य सोचना): "हमारे विद्यालय की बाल-सभा को और अधिक रोचक बनाने के लिए मेरे मन में एक नया विचार आया है।"
- मनन (पढ़े या सुने हुए को गहराई से सोचना): "कक्षा में शिक्षक द्वारा पढ़ाए गए कठिन गणितीय सूत्रों पर घर जाकर मनन करना अत्यंत आवश्यक है।"
- चिंतन (किसी समस्या पर गंभीर या दार्शनिक सोच): "देश के महान शिक्षाविद् युवाओं की बढ़ती बेरोजगारी की समस्या पर गहरा चिंतन कर रहे हैं।"

2: सुहावने — मधुर — मनमोहक

- सुहावने (जो दूर से या परिस्थिति के अनुसार अच्छा लगे): "गर्मी की तपिश के बाद बादलों की गड़गड़ाहट और मौसम के ये सुहावने दिन बहुत भाते हैं।"
- मधुर (जो कानों को सुनने में मीठा लगे): "सुबह-सुबह बगीचे में पक्षियों का मधुर कलरव मन को असीम शांति प्रदान करता है।"
- मनमोहक (जो आँखों को देखने में अत्यंत सुंदर लगे): "वसंत ऋतु में चारों ओर खिले रंग-बिरंगे फूलों का दृश्य अत्यंत मनमोहक होता है।"

## गतिविधियों के शेष अंश

### 1. अमीर खुसरो की अन्य प्रसिद्ध पहेलियाँ और मुकरियाँ

- **प्रसिद्ध पहेली:** > "एक थाल मोती से भरा, सबके सिर पर औंधा धरा।  
चारों ओर वह थाली फिरे, मोती उससे एक न गिरे।"

(उत्तर: आकाश और तारे)

- **प्रसिद्ध मुकरी (हास्य-व्यंग्य शैली):**

"रात समय वह मेरे आवे, भोर भये वह घर उठि जावे।

यह अचरज है सबसे न्यारा, ऐ सखि साजन? ना सखि तारा।"

### 2. 'युवा और वृद्ध- दो पीढ़ियों का अंतराल' (Generation Gap) वाद-विवाद नियम

विद्यालय की बाल-सभा में इस विषय पर होने वाली प्रतियोगिता के मुख्य नियम इस प्रकार हैं:

- प्रत्येक वक्ता को अपना पक्ष (युवा पीढ़ी का नवीन दृष्टिकोण या वृद्ध पीढ़ी के पारंपरिक अनुभव) रखने के लिए अधिकतम 3 मिनट का समय दिया जाएगा।
- चर्चा पूरी तरह साहित्यिक, मर्यादित और शालीन भाषा में होगी। किसी भी प्रकार के व्यक्तिगत आक्षेप या असंसदीय शब्दों के प्रयोग पर अंक कटौती की जाएगी।
- विरोधी पक्ष की बात पूरी होने के बाद ही खंडन करने का अवसर (Rebuttal) मिलेगा; बीच में टोकने पर नकारात्मक अंक दिए जाएँगे।





### भाषा संगम (विभिन्न प्रांतीय भाषा रूप)

संविधान की आठवीं अनुसूची में समाहित विभिन्न भारतीय भाषाओं में 'निबंध' शब्द के आदरणीय साहित्यिक रूप निम्नलिखित हैं :

- संस्कृत / पंजाबी / मराठी / गुजराती / कोंकणी / नेपाली: निबंध
- उर्दू / कश्मीरी: मजमून
- सिंधी: मज्मूनु, निबंधु
- बांग्ला: निबंध, प्रबंध
- असमिया: निबंध-रचना
- ओड़िआ: प्रबंध, रचना
- तेलुगु: व्यासमु
- तमिल: कट्टुरै
- मलयालम: उपन्यासम्
- कन्नड़: लेख, प्रबंध
- मातृभाषा (हिंदी) में मूल वाक्य का शुद्ध रूप: "निबंध लिखने के पहले उसकी रूपरेखा बना लेनी चाहिए।"

## Links और References

यदि आप इस निबंध की वैचारिक गहराई, निबंधशास्त्र के सिद्धांतों और लेखक अज्ञेय के पूरक विचारों को डिजिटल दृश्य माध्यम से समझना चाहते हैं, तो संदर्भ नीचे दिए गए हैं :

-  **आधिकारिक शब्दावली संदर्भ पोर्टल:** <https://shabd.education.gov.in/lexicon.jsp> — सामासिक पदों और तकनीकी हिंदी शब्दों के प्रामाणिक अर्थ हेतु उपयोगी।
-  **NCERT Official - क्या लिखूँ? पाठ चर्चा:**  
<https://www.youtube.com/watch?v=cq0Lgg7iM14> — विषय विशेषज्ञों द्वारा बख्शी जी के इस ललित निबंध की विस्तृत अकादमिक समीक्षा।
-  **कथा सम्राट प्रेमचंद एवं गद्य का आविर्भाव:**  
<https://www.youtube.com/watch?v=3314rJcclul> — मुंशी प्रेमचंद के गद्य साहित्य और तत्कालीन सामाजिक परिवेश पर आधारित विशेष वृत्तचित्र।
-  **साहित्यिक बचपन एवं ऐतिहासिक कहानियाँ:**  
<https://www.youtube.com/watch?v=bg0MzrE36Dg> — विद्यार्थियों के वैचारिक स्तर पर महान हिंदी गद्यकारों की जीवन यात्रा को समझाने वाला वीडियो।